रिकॉर्ड :– ओम नमो शिवाय..... ॐ पिताश्री 19/6/64

ओम् शांति। बच्चों ने गीत सुना। यह किसकी महिमा थी? तुम मात–पिता अर्थात् प०पि० परम+आत्मा (मा)ने परमात्मा; क्योंकि ऊँच ते ऊँच भगवत वही है। ऊँच ते ऊँच गॉड फादर, ईश्वर को फादर कहा जाता है। किसका फादर? सारी मनुष्य सृष्टि का फादर वह है बेहद का बाप। जब इनको बाप कहा जाता तो रचता भी है। मनुष्य सृष्टि का बाप रचता। वास्तव में सभी मनुष्य मात्र को दो बाप हैं– एक लौकिक, दूसरा पारलौकिक। पारलौकिक हुआ आत्माओं का बाप। आत्माओं को जिस्म देने वाला है लौकिक फादर। आत्मा तो निराकार ही है। आत्माओं का निवास स्थान निराकारी दुनिया में है, जिसको ब्रह्मलोक भी कहा जाता है। सभी आत्माओं को यह शरीर मिला हुआ है पार्ट बजाने लिए। ड्रामा के राज़ को भी अच्छी रीति समझना है। पहली–2 बात यह महिमा सुनो, (याद रखो), उनकी महिमा है सबसे न्यारी। गाते भी हैं– गॉड फादर मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। बीज बाप ऊपर में है। जब कहते हैं, ''ओह! गॉड फादर'' नज़र ऊपर में जाती है। सभी आत्माओं का फादर प०पि०प० है। उनकी महिमा है सबसे ऊँची; परन्तु मनुष्य बिल्कुल जानते नहीं हैं। सभी आत्माओं का फादर वह निराकार बाप है, फिर साकार बाप प्रजापिता ब्रह्मा, जिसको आदिदेव, महावीर, एडम भी कहते हैं, जिस द्वारा ... निराकार प०पि०प० मनुष्य सृष्टि रचते हैं। फादर को तो कब बेअंत नहीं कहा जा सकता। जैसे लौकिक फादर की रचना होती है, स्त्री को एडॉप्ट कर, उनसे बच्चे पैदा करते हैं तो उसको फादर कहा जाता। फादर को कब सर्वव्यापी, बेअंत नहीं कहेंगे। बाप से ही बच्चों को वर्सा मिलता है। तो निराकार प०पि०प० है सभी आत्माओं का बेहद का बाप। प्रजापिता ब्रह्मा हुआ मनुष्य सृष्टि का बेहद का बाप। यह समझना है गॉड इज़ वन, फादर इज़ वन। मनुष्य भूले ही हैं फादर को। आत्मा अपने फादर को भूल गई है। फादर को भूलने कारण सभी मनुष्य ऑरफन बन गए हैं। फादर को न जानने कारण बहुतों को यानी रचना को, भाई–बहन को याद करते रहते। फादर को भूल आपस में ही लड़ते–झगड़ते रहते। निधनके बन पड़े हैं। वर्सा मिलता ही है उस बाप से। ब्र०वि०शं० भी उनकी रचना है। ब्र०वि०शं० हैं सूक्ष्मवतनवासी। सूक्ष्मवतन के ऊपर है मूलवतन, जहाँ प०पि०प० रहते हैं। अहम् आत्मा भी वहाँ की रहवासी हैं। आत्माएँ कहेंगी– वह है गॉड फादरली स्वीट होम, निराकारी दुनिया। इन वतनों को भी जानना है। तीन लोक भी कहते हैं– मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन। ऊँच ते ऊँच है बाप। करन–करावनहार, क्रियेटर, डायरैक्टर वह प०पि०प० है। पहले–2 ब्र०वि०शं० को क्रियेट करते हैं, फिर ब्रह्मा मुखवंशावली बी०के०कुमारियाँ एडॉप्ट करते हैं। दिलवाला मंदिर में भी आदिदेव दिखाया है, नीचे तपस्या कर रहे हैं। तुम्हारा ही यादगार खड़ा है। जिन्होंने भारत को पतित से पावन बनाया है, उन्हों का यादगार खड़ा है। सभी सजनियों का साजन एक ही है। बरोबर मंदिर में जगदम्बा–जगतपिता बैठे हैं, राजयोग की तपस्या कर रहे हैं। भगवानुवाच्य, मैं ब्रह्मा तन द्वारा बैठ तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। जगदम्बा भी है, प्रजापिता ब्रह्मा है और बी०के०कुमारियाँ भी हैं, अधर कुमारियाँ भी हैं। मंदिर वाले खुद नहीं जानते– कुमारियाँ कौन, अधर कुमारियाँ कौन हैं। ज़रूर जगदम्बा–जगतपिता के बच्चे होंगे। इन सबको बैठ राजयोग सिखाते हैं। पहले–2 ब्रह्मा को कैसे रचते हैं, वह भी बतलाते हैं। साधारण तन में, वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश करता हूँ। तो यह आदिदेव समझना चाहिए न। प्रजापिता ब्रह्मा, जिसको महावीर कहते हैं, वह किसका बच्चा है? बाप बैठ समझाते हैं– इस ब्रह्मा के तन में प्रवेश करता हूँ। मेरा नाम है 'शिव'। ऐसे नहीं, बाप आते ही नहीं हैं। गाया हुआ है– यदा यदा हि.... इस समय यह है पतित दुनिया। कलहयुग का अंत है। सतयुग है पावन दुनिया। पावन दुनिया भी कैसे बनती है, वह समझना चाहिए। बाप समझाते हैं मैं ही गति–सद्गति दाता हूँ। गंगा नदी को गति–सद्गति

दाता नहीं कह सकते। पतित–पावन सबका प०पि०प० ही है। वह हैविनली गॉड फादर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। जबकि उनकी संतान हैं तो फिर क्यों नहीं हमको गॉड फादर से वर्सा मिलना चाहिए! समझ की बात है। बाप कहते हैं, सब मनुष्य बिल्कुल बेसमझ, पतित बन गए हैं। पतित कौन बनाती है? माया रावण। पावन बनाने वाला है बाप। मंदिर में भी पूरा यादगार है– नीचे तपस्या में बैठे हैं, ऊपर छत में स्वर्ग का यादगार है। देवी–देवताएँ भारत में ही थे। ज़रूर बाप आते हैं पतितों को पावन बनाने। कहते हैं, मैं कल्प–2 के संगमयुगे आता हूँ। संगमयुग है ऑस्पिशस युग, जबकि कलहयुग के अंत में मैं आकर सतयुग की स्थापना करता हूँ। यह बाप बैठ समझाते हैं। वह जन्म–मरण रहित हैं। मनुष्य को भगवान नहीं कहा जा सकता। मनुष्य तो 84 जन्म लेते हैं। तुम बच्चे जानते हो, यह है मृत्युलोक। सतयुग को कहा जाता है– अमरलोक। यह है रौरव नर्क। मनुष्य मात्र एक/दो को काटते रहते हैं। भारत ही पावन था, जिसमें देवी–देवताएँ राज्य करते थे। बाप आते ही हैं पतित दुनिया, पतित शरीर में। ज़रूर जो पहले सतयुग में आया होगा उसके ही तन में आवेंगे। गाया भी जाता है आत्माएँ प० अलग रहे बहुकाल...। पूरा हिसाब हो गया न। पहले आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले ही थे। पुनर्जन्म लेते 84 जन्म भी उन्हों को ही भोगने हैं। इस्लामी, बौद्धी आदि 84 जन्म नहीं ले सकते। भारत है ही प०पि०प० का बर्थ प्लेस। सब खण्डों से ऊँच है भारतखण्ड। यह है पतित–पावन प०पि०प० की बर्थ प्लेस; परन्तु अभी है कलहयुग। बाबा ने समझाया है यह है अविनाशी वर्ल्ड ड्रामा, इनका कब विनाश नहीं होता। वर्ल्ड हिस्ट्री–जाग्राफी रिपीट होती रहती है। जो इस नॉलेज को जान स्वदर्शनचक्रधारी बनते हैं वही चक्रवर्ती राजा बनेंगे। भारत में जब देवी–देवताओं का राज्य था, और कोई धर्म न था। नए भारत में नई राजधानी देवी–देवताओं की थी। वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉर्टी ..... सब था। उनपर कोई जीत पाय न सके। श्री ल०ना० सारे विश्व के मालिक थे। उन्हों को विश्व का मालिक बनाने वाला विश्व का रचता ज़रूर होगा। वह है प०पि०प०, गॉड फादर। इस समय देवी–देवता धर्म का नाम–निशान नहीं है। देवी–देवताओं के सिर्फ चित्र हैं; परन्तु उन्हों के ऑक्युपेशन को कोई भी जानते नहीं। इस समय गवर्मेन्ट में भी कोई ताकत न है। हैं ही पतित, 100% इररिलीजस, अपने धर्म का पता न है। कहा जाता है– रिलीजन इज़ माइट। रिलीजन स्थापन करने वाला है बाप, उनको ही सर्वशक्तिवान कहा जाता है। तो गॉड फादर, फादर भी है, फिर उनको नॉलेजफुल कहा जाता। टीचर भी है, फिर उनको पतित–पावन कहा जाता। सत्गुरु भी है। उनका कोई फादर नहीं, वह है सुप्रीम फादर, सब सुप्रीम टीचर; क्योंकि नॉलेजफुल है। और कोई भी मनुष्य ड्रामा के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान नहीं जानते। उनका कोई टीचर नहीं। सद्गति दाता भी सबका एक ही है। उनका कोई गुरु नहीं। वही बेहद का बाप, बेहद का टीचर, बेहद का सत्गुरु है। बाप समझाते हैं भारत कंगाल, पतित है। पतित बनाती है माया रावण। अभी भारत आसुरी राजस्थान है, अनेक राजाएँ हैं। सतयुग में दैवी राजस्थान था, जिसको स्वर्ग, हैविन कहा जाता था। भारत ही ऊँच ते ऊँच, अविनाशी खण्ड है। अविनाशी बाप का यह बर्थ प्लेस है। भारत खण्ड कभी विनाश को नहीं पावेगा, और सब खत्म हो जावेंगे। तो बाप का भी इस ड्रामा में पार्ट है, जो इस पतित सृष्टि को पावन बनाय आदि सनातन धर्म की स्थापना कराते हैं। शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश कराने का निमित्त बना हुआ है। यह विनाश कोई अकल्याणकारी नहीं है, यह तो रुद्र ज्ञान यज्ञ है, जिससे यह विनाश ज्वाला प्रगट हुई है। कृष्ण का यज्ञ नहीं, न कृष्ण ने गीता सुनाई। कृष्ण भगवानुवाच्य नाम है। भारतवासियों ने गीता माता को खण्डन कर दिया है। गीता है सर्व शास्त्रमई शिरोमणि। माता गीता का बाप मनुष्यों ने कृष्ण को बनाय दिया है। बाप कहते हैं, गीता का रचता है प०पि०प०। भगवानुवाच्य, मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ न। तुम राजयोगी हो, वह हठयोगी। तुम बच्चों को सारी पुरानी सृष्टि पर देह सहित जो कुछ भी है, सबका त्याग करना है अर्थात् पुरानी दुनिया का सन्यास करना है। मैं गाइड बन सबको वापस ले चलने आया हूँ। बाप ही दुःखों

से लिबरेट करते हैं। आधा कल्प है भक्ति अर्थात् रावण राज्य, आधा कल्प है राम राज्य। यह बाप बैठ समझाते हैं, कोई मनुष्य नहीं समझाते। बाप कहते हैं, यह साधु लोग जो मेरा परिचय देते हैं वह भी राँग देते हैं। सब आत्माओं का बाप एक है। यह बाप बैठ आत्माओं से बात करते हैं। समझाते हैं, सन्यास भी अनेक प्रकार के हैं। यह है प्रवृत्तिमार्ग। भारत में प्युरिटी थी तो पीस–प्रॉसपेरिटी थी। अब प्युरिटी नहीं तो प्रॉसपेरिटी नहीं है, सब रोगी, दुःखी हैं। अभी भारत दुःखधाम है। भारत ही सुखधाम था। अब बाप कहते हैं– बच्चे, मेरे साथ योग लगाओ। पहले तो निश्चय होना चाहिए, हम आत्मा है, न कि परमात्मा; जैसे सन्यासी कहते हैं– ईश्वर सर्वव्यापी है। परमात्मा की तो महिमा बहुत भारी है– तुम मात–पिता.... तो मात–पिता सर्वव्यापी व बेअंत कैसे हो सकता! (हिन्दू कोई धर्म नहीं, इस पर समझानी) भारतवासी धर्मभ्रष्ट और दैवी पवित्र कर्मभ्रष्ट हो गए हैं। सतयुग में सब पवित्र थे, अब वही भारतवासी अपवित्र बन गए हैं। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र यह वर्ण हैं न! तुम हो प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद ब्राह्मण। आदिदेव ब्रह्मा को किसने जन्म दिया? बाप कहते हैं, मैंने इसमें प्रवेश कर उनका नाम ब्रह्मा रखा। इनको एडॉप्ट किया। यह भागीरथ है। बाकी कोई लड़ाई आदि का मैदान नहीं है। तुम हो अहिंसक। हिंसा डबल होती है। एक तो, काम–कटारी की हिंसा, दूसरी फिर एक/दो को मारने की। बाप कहते हैं, यह काम महाशत्रु है, इससे तुमने आदि–मध्य–अंत दुख पाया है। रावण राज्य द्वापर से शुरू हुआ है, जबकि ब्रह्मा की रात शुरू होती है। यह संगमयुग ही सबसे कल्याणकारी है, पीछे तो नीचे उतरते जाते हैं। देवताएँ–क्षत्रिय से वैश्य–शूद्र वर्ण में आना ही है। जो ब्राह्मण धर्म के होंगे वही ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ बनेंगे। मंदिर बनाने वाले कुछ भी जानते नहीं। ड्रामा अनुसार यादगार बनाए जाते हैं, हैं सब ब्लाइंड फेथ; जैसे कि गुड़िओं की पूजा की जाती है। 8–10 भुजाओं वाले मनुष्य तो हैं नहीं। भारत में अंधश्रद्धा बहुत है। प०पि०प० से बेमुख करने वाले यह कलहयुगी गुरु हैं। या तो कह देते सर्वव्यापी या कहते, बेअंत है। अब फादर बेअंत कैसे हो सकता! आगे ऋषि–मुनि सच कहते थे कि हम रचता–रचना का अंत नहीं पाय सकते, वह तो रचता ही बताय सकते हैं। अभी के तमोगुणी सन्यासी लोग फिर कहते– सर्वव्यापी है। उनसे भी तमोप्रधान सन्यासी कहते– शिवोहम्, तत् त्वम्। तो यह धर्म ग्लानि हुई न! बाप कहते हैं, मेरी बहुत ग्लानि करते हैं। जब–2 ऐसी धर्म ग्लानि होती है तब फिर मैं आता हूँ। भारत जीवनमुक्त था, अभी जीवनबंध है। बाप आकर सेकेण्ड में जीवनमुक्ति देते हैं। बाप से भारत को कल्प–2 बेहद सुख का वर्सा मिलता है। मुक्ति–जीवनमुक्ति का वर्सा मनुष्य, मनुष्य को दे न सके। कलहयुगी गुरु हैं सब डुबोने वाले, पार ले जाने वाला एक ही सतगुरु है। तुम विश्व के रचता बाप द्वारा विश्व के मालिक बन रहे हो। बाप कहते हैं, मैं तो निष्काम हूँ। ब्रह्मा द्वारा तुमको विश्व का मालिक बनाए, मैं वानप्रस्थ में बैठ जाता हूँ। गाया जाता है– दुख में सुमिरण सब करे, सुख में करे न कोए। अब सभी भक्त एक भगवान को याद करते हैं, फिर सर्वव्यापी कह दे, तो भक्त कैसे ठहरे! यह उल्टा ज्ञान है। बाप कहते हैं, तुम कितने बेसमझ बन पड़े हो! बाप को बेअंत कह देते हो, फिर वर्सा कैसे मिलेगा! फादर तो रचते हैं मुखवंशावली। तुम हो प्रजापिता ब्रह्मा की मुखवंशावली, वह ब्राह्मण हैं कुखवंशावली। वह जिस्मानी पण्डे, तुम हो रूहानी पण्डे। बाप सभी आत्माओं को कहते हैं, अब तुम मुझ बाप को याद करो। बाप को थोड़े ही भूलना चाहिए। बाप को भूला तो वर्सा कैसे मिलेगा! बाप कहते हैं– माम् एकम् याद करो। बाकी सब हैं रचना, उनसे वर्सा नहीं मिल सकता। अच्छा, आज सभा में चार/पाँच नए विजिटर्स आए हुए थे; इसलिए बापदादा की मुरली में बहुत करके प्वाइंट में रिपीटेशन थी। मात–पिता, बापदादा का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ

मु॰ की ता॰ कटी हुई है

रात्रि का क्लास 1..../6/64 पिताश्री :– सभी बच्चों को नशा चढ़ता है जबकि बाप आए सामने बैठते हैं। अति इन्द्रिय सुख तो निश्चयबुद्धि होने से ही रहना चाहिए। खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। बच्चों को ही खुशी का पारा चढ़ता है। प्राप्ति बच्चों को होती है। बाप पूछेंगे, अभी समझते हो– कितनी कमाई बाप से होती है। मनुष्यों के पास धन तो बहुत है; परन्तु तुम बच्चे ही सिर्फ जानते हो कि सबको कखपति बनना है। बहुत मेहनत कर धन कमाते; परन्तु सब मिट्टी में मिल जाना है। साहुकार होने वाले तुम हो। तुम्हारे कदम–2 में पदम है। पाँव में पदम की निशानी दिखाते हैं न! तुम्हारी सेकेण्ड–2 में इतनी कमाई है कि लाखों की तो बात ही नहीं। धन है तो सुख है और नॉलेज से ही धन की प्राप्ति होती है। शास्त्र आदि सुनने से धन नहीं मिलता, धन मिलता है धंधा करने से। तुम धंधा भी करते हो, पुराना ठिक्कर–ठोबर देकर हीरे लेते हो। तुम्हारे जैसा महान सौभाग्यशाली इस सृष्टि में कोई हो नहीं सकता, जितना जो पुरुषार्थ करेगा। देह सहित सबका बुद्धि से त्याग करना है, अपने बच्चों की पालना करनी है। तुम कहते हो, सब ईश्वर देता है। ईश्वर सन्मुख आया हुआ है। अब तो बाप कहते हैं– बलि चढ़ो तो 21 जन्म के लिए वर्सा पाएँगे। आगे तो थोड़ा देते थे, थोड़ा मिलता था। बच्चों आदि की पालना तो ज़रूर करनी है, सो भी श्रीमत पर। वहाँ तुम बुरे तरफ धन लगाए पाप न करो। जानते हो, बेहद का बाप मिला है। विष्णु के कांधे पर बच्चे दिखाते हैं न; परन्तु हैं ब्रह्मा के कांधे पर। कहते हैं न– शेर के कांधे पर चढ़ा हुआ है। तो बाप कहते हैं, कल्प–2 तुम बच्चों को गुल–2 बनाए, साथ ले जाता हूँ। दैवी गुण यहाँ धारण करने हैं। श्रीमत पर चल सौभाग्य बनाना है। देखते भी हो, मम्मा–बाबा और अनन्य बच्चे बड़ी कमाई कर रहे हैं। तुम्हारा ध्यान भी गरीबों पर जाना चाहिए। गरीब बलि चढ़ने में देरी नहीं करते। ईश्वर का बन, फिर 21 जन्म दैवी बाप के गोद में जाना है। परमात्मा को न याद रखेंगे तो वर्सा कैसे याद रहेगा! साहुकार से यह कमाई तुम्हारी बड़ी अच्छी है। गृहस्थ–व्यवहार में रहते कोर्स उठाते रहो। गफलत न करो। जास्ती लालसा न रखनी चाहिए। बहुत पैसा होगा तो और ही ममत्व हो जावेगा। बलिहारी गरीबों की। बाप भी गरीब–निवाज़ है। कन्याएँ भी अच्छी और जिन माताओं को बच्चे नहीं, उन्हों को भी बंधन नहीं। बच्चों को अब ईश्वरीय लॉटरी मिलती है। योगबल की दौड़ में पहला नम्बर जाने का पुरुषार्थ करना है। हाथ–पाँव कुछ नहीं चलाना है, यहाँ सिर्फ बुद्धि का काम है। यह है अति सहज कमाई। अपनी निरोगी काया बनानी है। तुम बच्चे सन्मुख बैठे हो। बाबा नशा चढ़ाते हैं फिर यह नशा बहुतों का कम हो जाता है। यह याद रखना है कि हम उनके हैं। खाते–पीते, चलते–फिरते बाबा बहुत अच्छा याद पड़ना चाहिए। वह सगाई होती है तो याद कितनी रहती है; परन्तु वण्डर है कि यहाँ माया खड़ी–2(घड़ी–2) नशा तोड़ देती है।

चेम्बूर 12/6/64 :– बाप कहते हैं– मीठे–2 बच्चे, श्रीमत पर चलने पुरुषार्थ करो। जितनी दुआएँ चाहो उतनी लो। इसमें खर्चा तो कुछ नहीं। अपने ऊपर कृपा करो। स्वदर्शनचक्र फिराते रहो। अभी तुम बाप के बने हो। तुम ब्राह्मण सर्वोत्तम सेवाधारी हो। तुम सारी सृष्टि को (चेंज) कर रहे हो– शान्ति वा सुख का वर्सा पाने। यह भूलो मत। माया बहुत पछाड़ेगी; परन्तु बाप को भूलो मत। बाप पतित दुनिया में आए, पावन बनाए, सबको ले जाते हैं। अब दुनिया बदल रही है। तुम मात–पिता के सन्मुख बैठे हो। जानते हो– जन्म–जन्मांतर की पापों की गठरी योगबल से ही उतरेगी। पुरुषार्थी बच्चा वह जो पूरा वर्सा ले दिखावे। तो बाप भी खुश होंगे। ओम् शान्ति।

मम् प्राणों, आप सभी इंतजार में होंगे (कि) माँ कब मधुबन में पधारेंगी। माँ को जुलाई मास भी बॉम्बे ठहरना है। फिर जब मधुबन आने का प्रोग्राम होगा तो समाचार लिखेंगे। बाकी माँ की तबीयत ठीक है।